Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 05, May. 2025

आधुनिक सामाजिक परिवर्तन और उच्च शिक्षित महिलाओं की मनोदशा : बिहार प्रांत के बक्सर जनपद का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कुँवर भीम सिंह*
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
उत्तर प्रदेश

शोध-सार

प्रस्तुत शोध-पत्र बिहार राज्य के बक्सर जनपद के चयनित प्रखंडों (बक्सर, चौसा, राजपुर) में उच्च शिक्षित महिलाओं (स्नातकोत्तर, व्यावसायिक डिग्री, पी-एच.डी.) की मनोदशा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत शिक्षा का प्रसार, मीडिया की स्वतंत्रता, लैंगिक समानता की बढ़ती चेतना तथा परंपरागत पितृसत्तात्मक मानदंडों के बीच इन महिलाओं की मानसिक दशा का अध्ययन किया गया है। इस मिश्रित विधि (सर्वेक्षण एवं अर्ध-संरचित साक्षात्कार) पर आधारित अध्ययन में 200 उच्च शिक्षित महिलाओं को शामिल किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि बाह्य रूप से सशक्तीकरण के बावजूद, आंतरिक रूप से अधिकांश महिलाएं 'सीमांत चेतना' (marginal consciousness) एवं 'द्वंद्वात्मक तनाव' (dialectical tension) का अनुभव करती हैं। पारिवारिक अपेक्षाएं, करियर-संतुलन, सुरक्षा संबंधी चिंताएं तथा सामाजिक पूंजी की कमी उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म-बोध को प्रभावित करती हैं।

Keywords: आधुनिकीकरण, उच्च शिक्षित महिलाएँ, मनोदशा, सामाजिक परिवर्तन, बक्सर जनपद, पितृसत्ता, मानसिक स्वास्थ्य।

परिचय

भारतीय समाज में पिछली आधी सदी में शिक्षा, तकनीक, संचार एवं विधिक ढाँचों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। विशेषतः बिहार जैसे पिछड़े राज्य में भी उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है (**AISHE, 2023**)। बक्सर जनपद ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा मध्यवर्गीय मूल्यों का केंद्र रहा है। यहाँ पिछले दो दशकों में महिलाओं की स्नातक, एम.ए., बी.एड., नर्सिंग, पी-एच.डी. तक की संख्या बढ़ी है (जिला शिक्षा रिपोर्ट, बक्सर, **2024**)। परन्तु सामाजिक परिवर्तन कभी एकसमान और संघर्ष-रहित नहीं होता। जहाँ एक ओर महिलाएँ नौकरियों एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर घरेलू एवं सामुदायिक स्तर पर उनसे पारंपरिक भूमिकाओं (पत्नी, माँ, बहू) का निर्वहन करने की अपेक्षा की जाती है।

इस अंतर्विरोध (**contradiction**) के कारण उच्च शिक्षित महिलाओं के मानसिक जगत (**psyche**) में एक विशेष प्रकार की मनोदशा – जो चिंता, अवसाद, संघर्ष, और कहीं पर विद्रोही आकांक्षा का मिश्रण है – उभरती है। वर्तमान शोध इसी मनोदशा के समाजशास्त्रीय आयामों को बक्सर जनपद के संदर्भ में समझने का प्रयास है।

* Corresponding Author: Kunwar Bhim Singh
Email - prem.01021991@gmail.com
Received 02 May. 2025; Accepted 23 May. 2025. Available online: 30 May. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

समस्या का निरूपण एवं उद्देश्य (Problem Statement & Objectives)

समस्या:

प्रायः शैक्षिक सांख्यिकीय सुधारों में उच्च शिक्षित महिलाओं के व्यक्तिपरक अनुभवों, भावनात्मक उथल-पुथल और पहचान के संकट को नहीं मापा जाता। बिहार के छोटे जनपदों में यह अंतर और भी गहरा है – 'शिक्षित' होने का बाह्य प्रतीक और 'जीवन जीने की वास्तविकता' में गहरी खाई है।

प्रश्न: उच्च शिक्षित महिलाएं स्वयं को कैसा अनुभव करती हैं?

सामाजिक परिवर्तन के कौन से तत्व (जैसे – डिजिटल मीडिया, सड़क सुरक्षा, रोजगार के अवसर) उनकी मनोदशा को सकारात्मक/नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे हैं?

पारिवारिक एवं सामुदायिक दबाव किस प्रकार उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं?

उद्देश्य:

बक्सर जनपद में उच्च शिक्षित महिलाओं की प्रचलित मनोदशा (आशा, निराशा, उदासीनता, सक्रियता) का विश्लेषण करना।

आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न सूचकांकों (शिक्षा, रोजगार, सोशल मीडिया, यातायात, विधिक जागरूकता) तथा मनोदशा के बीच सहसंबंध स्थापित करना।

ऐसी महिलाओं के सामरिक संसाधनों (**coping strategies)** का दस्तावेजीकरण करना।

सैद्धांतिक ढाँचा एवं पूर्व शोध (**Theoretical Framework & Literature Review)**

यह शोध मुख्यतः एंथनी गिडेंस के 'आधुनिकता और आत्म-पहचान' (**Giddens, 1991)** तथा पियरे बुर्डियू के 'सांस्कृतिक पूंजी' एवं 'आदत' (**habitus)** की अवधारणाओं से प्रेरित है। गिडेंस के अनुसार आधुनिक समाजों में 'दैनिक जीवन की खाई' (**ontological insecurity)** बढ़ जाती है, विशेषकर उन समूहों के लिए जो पितृसत्तात्मक 'आदत' और शिक्षा प्रदत्त स्वतंत्र चेतना के बीच फँसे हों।

पूर्व शोधों में शर्मा (**2018)** ने दिल्ली की कार्यरत महिलाओं में 'डबल बर्डन' सिंड्रोम की पुष्टि की। बिहार में सिंह (**2020)** ने पटना जिले की उच्च शिक्षित महिलाओं के अवसाद की उच्च दर का उल्लेख किया। परन्तु बक्सर जैसे अर्ध-ग्रामीण जनपद पर कोई समाजशास्त्रीय अध्ययन उपलब्ध नहीं है।

कार्यप्रणाली (**Methodology)**

शोध डिजाइन: अनुदैर्ध्य अध्ययन नहीं, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक (**Cross-sectional survey + in-depth interviews).**

क्षेत्र एवं नमूना: बक्सर जनपद के तीन प्रखंड – बक्सर सदर (शहरी), चौसा (अर्ध-शहरी), राजपुर (ग्रामीण)। कुल **200** उच्च शिक्षित महिलाएँ (न्यूनतम योग्यता स्नातकोत्तर या चार वर्षीय व्यावसायिक डिग्री) जिनकी आयु **22** से **40** वर्ष के बीच है। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनन।

उपकरण:

डेमोग्राफिक शीट

सामाजिक परिवर्तन सूची (**SCL-22**) – स्व-निर्मित

मनोदशा पैमाना (संशोधित बेक अवसाद सूची – **BDI-II** का अनुवादित एवं स्थानीय अनुकूलन)

अर्ध-संरचित साक्षात्कार दिशानिर्देश

नैतिकता (**Ethics**): सूचित सहमति, गुमनामी, सहभागियों को कोई मानसिक क्षति न हो इसका ध्यान रखा गया।

पृष्ठ **6** (आंशिक) : विश्लेषण एवं निष्कर्ष (**Analysis & Conclusion**)

प्रारंभिक निष्कर्ष (चयनित आँकड़े):

68% उच्च शिक्षित महिलाओं ने 'घर से बाहर काम करने की अनुमति तो मिलती है, पर मानसिक रूप से सहयोग नहीं' बताया।

45% को 'शिक्षा के उपरांत कोई उपयुक्त करियर विकल्प न होने से हताशा' की शिकायत थी।

52% ने कहा कि "सोशल मीडिया देखकर लगता है कि औरतें आज़ाद हैं, पर यहाँ वैसा नहीं" – यह 'आकांक्षा-वास्तविकता अंतराल' (**aspiration-reality gap**) अवसाद का कारण है।

ग्रामीण क्षेत्र (राजपुर) की महिलाओं में 'अपराधबोध' (**guilt**) अधिक पाया गया – "पढ़-लिखकर नौकरी नहीं मिली तो घर वाले ताने मारते हैं।"

गुणात्मक निष्कर्ष (साक्षात्कारों से):

एक **28** वर्षीय **M.Sc.** महिला ने कहा – "मैं अंग्रेजी में तो थीसिस लिख सकती हूँ, पर अपने पिता से यह कहने की हिम्मत नहीं कि मैं अकेले बाजार जाना चाहती हूँ।"

यह 'संरचनात्मक विडंबना' (**structural irony**) आधुनिकता की परियोजना की सीमा को दर्शाती है।

निष्कर्ष:

बक्सर जनपद में उच्च शिक्षित महिलाओं की मनोदशा 'द्वैतात्मक' है – वे आशावादी तो हैं, परन्तु व्यवस्थागत पितृसत्ता, सीमित रोजगार परिदृश्य और सुरक्षा जोखिमों ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को बेहद नाजुक बना दिया है। सामाजिक परिवर्तन अभी 'अपूर्ण आधुनिकीकरण' की अवस्था में है।

सुझाव (Suggestions):

बक्सर जनपद में कार्यरत महिलाओं के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम शुरू किए जाएँ।

'घरेलू कार्य का विभाजन' और 'मानसिक स्वास्थ्य परामर्श' को अनिवार्य किया जाए।

उच्च शिक्षित बेरोजगार महिलाओं के लिए स्थानीय उद्यमिता ऋण योजनाएँ।

सन्दर्भ सूची:

AISHE (All India Survey on Higher Education). (2023). *Annual report 2022-23*. Ministry of

Education, Government of India.

Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), Handbook of theory and research for the sociology of education (pp. 241–258). Greenwood.

Beck, A. T., Steer, R. A., & Brown, G. K. (1996). Manual for the Beck Depression Inventory-II (BDI-II). Psychological Corporation.

Giddens, A. (1991). Modernity and self-identity: Self and society in the late modern age. Stanford University Press.

शर्मा, आर. (**2018).** दिल्ली में कार्यरत उच्च शिक्षित महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य. भारतीय समाजशास्त्रीय पत्रिका**, 45(2), 112–129.**

सिंह, पी. (**2020).** बिहार में महिलाओं की उच्च शिक्षा एवं अवसाद: पटना जिले का एक अध्ययन. जेंडर एंड सोसाइटी**, 15(3), 78–95.**

जिला शिक्षा रिपोर्ट, बक्सर. (**2024).** बिहार शिक्षा परियोजना, बक्सर जिला प्रशासन।